आजकल लोग कहानी पढ़ने में बहुत ... लेते हैं

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास

→ भूमिका :-
भारतीय साहित्य में नाटकों की समृद्ध परंपरा देखी जा सकती है। नाटक समाज को दर्शाने का कार्य भी करते हैं। कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' संसार के श्रेष्ठ नाटकों में से एक है। इस युग में नाटकों की काव्यात्मकता की अधिकता होती थी और ये नाटक रंगमंच को दर्शाने का भी कार्य करते हैं। हिन्दी में नाटक का आरंभ अंग्रेजी शासन से पहले ही हो चुका था। हिन्दी नाटक का उद्भव यहीं से हुआ।

→ हिन्दी नाटक का उद्गम :-
सही अर्थों में हिन्दी नाटक का उद्गम पारसी रंगमंच के समय में हुआ था। इस प्रकार ब्रजभाषा में भी अनेक नाटकों की रचना हुई जैसे – महाराजा यशवंत सिंह द्वारा अनुदित 'प्रबोध चन्द्रोदय' नवाज कवि द्वारा अनुदित 'शकुन्तला नाटक' आदि ये सभी मौलिक नाटक हैं। भारतेंदु ने अपने पिता गोपाल चन्द्र गिरिधर दास कृत 'नहुष' नाटक को हिंदी का पहला नाटक माना जाता है।

→ हिंदी नाटक का विकास :-
हिंदी नाटकों की परंपरा

Page No.

की शुरुआत भारतेन्दु-युग में हुई जयशंकर प्रसाद हिंदी नाटक में मील का पत्थर है उन्हीं के नाम पर ही हिन्दी नाटको का वर्गीकरण किया जा सकता है हिन्दी नाटक के विकास को चार भागों में बांटा जा सकता है →

i) भारतेंदु युग ii) प्रसाद युग iii) प्रसादोत्तर युग

iv) आधुनिक युग

→ भारतेन्दु युग :-

भारतेन्दु जी ने अनुदित व मौलिक दोनों प्रकार के नाटकों की रचना की है उनके मौलिक नाटकों में 'वैदिकी हिंसा न भवति', 'विषस्य विषमौषधम', 'चन्द्रावली', भारत-दुर्दशा आदि प्रमुख है इस युग के प्रमुख नाटककारों में बालकृष्ण भट्ट, राधा चरण गोस्वामी, राधाकृष्ण दास, लाला श्री निवासदास आदि का नाम लिया जा सकता है इस युग के नाटको को विषय वस्तु के आधार पर पांच भागों में बांटा जा सकता है - सामाजिक नाटक, ऐतिहासिक, पौराणिक, राष्ट्रिय व रोमांटिक नाटक। इस युग में बालकृष्ण भट्ट ने 'दमयंती स्वयंवर', 'वेणी संहार' जैसे पौराणिक व ऐतिहासिक नाटको की रचना हुई दूसरी ओर 'नई रोशनी का दोष' 'जैसे काम वैसा परिणाम' आदि जैसे सामाजिक नाटकों की रचना हुई। इस प्रकार इस युग में ऐतिहासिक, सामाजिक आदि नाटकों की रचना हुई।

Page No.

प्रसाद युग :-

प्रसाद जी ने अपने जीवनकाल में ऐतिहासिक नाटकों की रचना की। उन्होंने नाटक के लिए रंगमंच व समय का भी ध्यान रखा कहा कि नाटक के लिए रंगमंच होते हैं न कि रंगमंच के लिए नाटक। उनके द्वारा रचित नाटक 'करुणालय', 'विशाख', 'कामना', 'एक घूंट', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि विशाख प्रथम नाटक माना जाता है। इस युग के नाटकों में राष्ट्र-प्रेम की भावना की प्रधानता है। इस युग के नाटकों को ③ पौराणिक, ऐतिहासिक व सामाजिक नाटक में बांटा है। इस प्रकार इस युग में प्रेमचन्द ने ऐतिहासिक नाटक 'कर्बला' भी लिखा और संग्राम सामाजिक नाटक लिखा। ~~इस प्रकार~~ इस काल में ऐतिहासिक और ~~सामाजिक नाटक लिखे गए।~~

प्रसादोत्तर युग :-

इस युग में प्रसाद की मृत्यु के बाद सन् 1937 से 1950 के नाटक भी शामिल हैं। इस युग के नाटकों को चार भागों में बांटा जा सकता है - सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व सामाजिक, राजनीतिक व समस्या प्रधान नाटक। ऐतिहासिक नाटक में गोविंद वल्लभ पंत, राजमुकुट, जय-पराजय आदि जिन्होंने जन साधारण में राष्ट्रीय चेतना भरने का प्रयास किया सामाजिक, राजनीतिक नाटकों में सेठ गोविंददास, सेवापथ, संतोष कहां, अमीरी-गरीबी, राखी की लाज आदि विशेष रूप से लिए जाते हैं इन नाटकों में मुख्य रूप से नारी-शिक्षा, विधवा-विवाह, संयुक्त परिवार की समस्या आदि को उठाया। इस प्रकार इस युग में समस्या प्रधान नाटक लिखे गए।

आधुनिक युग :-

इस युग में 1950 व स्वतंत्रता के बाद भी नाटक लिखे गए इस युग में निम्न वर्ग में अशांत दांपत्य जीवन, बढ़ती भौतिकवादी प्रवृत्ति के साथ-2 समाज में फैलते भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद आदि का भी वर्णन किया और मध्यम वर्ग व उसकी समस्याओं को भी उठाया गया और इस युग के नाटकों को रेडियो पर भी सुना जाने लगा इस युग में मोहन राकेश ने अपने तीन नाटकों - लहरों के राजहंस, 'आषाढ़ का दिन' व 'आधे-अधूरे' के द्वारा हिंदी नाटक की विकास यात्रा को बढ़ावा दिया आधे-अधूरे नाटक में वर्तमान युग की पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं को दर्शाया गया है इस युग के नाटककारों ने प्रतीकात्मक नाटकों की रचना भी की इस प्रकार इस युग में अनेक समस्याओं से प्रधान और महत्वपूर्ण नाटक लिखे गए।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार कह सकते है कि नाटक समाज व रंगमंच को दर्शाने का कार्य करते है नाटक की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है नाटक किसी भी समस्या व भावना को लेकर लिखे जा सकते है नाटक समय की सीमा का भी ध्यान रखते है